तुलसीदास और संत के बीच संवाद (दैन्या घाट) का अध्ययन

Shiv Prakash[1], Dr. Rajesh kumar[2]

[1]Research Scholar, Sunrise University, Alwar, Rajasthan
[2]Research Supervisor, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

सारांश

मानस में शामिल संवाद जो कहानी को एक नया मोड़ देते हैं और जिसकी मदद से कहानी आगे बढ़ती है, स्पीड देने वाले संवाद की श्रेणी में आते हैं। यद्यपि मानस के लगभग सभी संवाद कहानी की क्रिया को सक्रिय करते हैं, कुछ विशिष्ट संवाद हैं, जो घटनाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। जब मानस के संवादों की बारीकी से जांच की जाती है, तो यह बात सामने आती है कि लगभग पचास संवाद ऐसे हैं जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कहानी को गति प्रदान करते हैं। चूंकि गोस्वामी तुलसी दास ने भगवान राम की स्तुति गाने के लिए राम चार मानस का मसौदा तैयार किया था, वे खुद को एक बच्चा मानते हैं और सभी आम लोगों से इसे बहुत ध्यान से सुनने की अपील करते हैं:

छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई। सुनिहहिं बालबचन मन लाई (1)

इस विनम्र प्रार्थना के तुरंत बाद, तुलसी दास - राम चरित मानस - की रचना नाम और प्रसिद्धि की ऊंचाइयों पर पहुंच गई और आज इसे दुनिया के महान महाकाव्यों में से एक माना जाता है। ऐसे में अलग-अलग भाषाओं में और अलग-अलग कोणों से इसका अध्ययन करना काफी स्वाभाविक है। इसी वजह से आज राम जप मानस की व्याख्या दुनिया की कई भाषाओं में की जाती है और इस विशेष ग्रंथ पर कई व्याख्याएं और अनुवाद किए जाते हैं।

मुख्यशब्द: तुलसी दास, राम चरित मानस, महाकाव्यों, समस्त ज्ञान

प्रस्तावना

दशरथ और वशिष्ठ के बीच संवाद (सभा संवाद)

निम्नलिखित संवाद उस समय का है जब भगवान राम और जानकी का विवाह हो कर अयोध्या आता है और वहाँ का वातावरण रीस का बहुत स्वागत करता है। उसी समय दरबार में यह संवाद गुरु वशिष्ठ और दशरथ के बीच होता है। भगवान राम के गुणों और वीरता से अत्यधिक प्रभावित होकर अयोध्या के सभी निवासी उन्हें एक उत्तराधिकारी राजकुमार के रूप में देखना चाहते हैं। सब कुछ की इस इच्छा को जानकर और अपनी उम्र के चौथे चरण को महसूस करते हुए, राजा दशरथ ने अपने सामने गुरु वशिष्ठ को देखकर कहा:

सब बिधि गुरु प्रसन्न जियँ जानी। बोलेउ राउ रहँसि मृदु बानी॥
नाथ रामु करिअहिं जुबराजू। कहिअ कृपा करि करिअ समाजू॥(1)

इस पर, गुरु वशिष्ठ, भगवान राम की महिमा और भरत के प्रति उनके प्रेम को परिभाषित करते हुए कहते हैं:

सुनु नृप जासु बिमुख पछिताहीं। जासु भजन बिनु जरनि न जाहीं॥
भयउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी। रामु पुनीत प्रेम अनुगामी॥(2)

इस प्रकार, बिना किसी देरी के, भगवान राम के राज्याभिषेक के लिए सुझाव देते हुए, मुनि कहते हैं कि जिस क्षण भगवान राम का राज्याभिषेक होगा, वह शुभ और पवित्र क्षण होगा। दिए गए संवाद में, हम दशरथ की इच्छा, भगवान राम के प्रति उनके विशेष लगाव और एक राजा के कर्तव्यों के प्रति उनकी जागरूकता की एक झलक पाते हैं। वह पहले नागरिकों, दरबारियों और गुरु को अपने विश्वास में लेता है और उसके बाद ही अपनी इच्छा प्रस्तुत करता है। गुरु वशिष्ठ जिन्हें पहले से ही भगवान राम के दिव्य रूप

के बारे में पता था, भगवान राम को राजा दशरथ का अनुयायी और आज्ञाकारी बताते हैं और फिर उनके तत्काल राज्याभिषेक के लिए सुझाव देते हैं।

देवगण और सरस्वती के बीच संवाद (विविध संवाद)

निम्नलिखित संवाद उस समय होता है जब राजा दशरथ भगवान राम के राज्याभिषेक का आदेश देते हैं और पूरी अयोध्या में हर्ष और उल्लास का माहौल होता है। लेकिन देवता खुश नहीं हैं और इससे चिंतित हैं। अत: वे सरस्वती से निवेदन करते हैं:

बिपति हमारि बिलोकि बड़ि मातु करिअ सोइ आजु।
रामु जाहिं बन राजु तजि होइ सकल सुरकाजु॥(3)

देवताओं के शब्दों का अर्थ समझकर सरस्वती स्वयं को भगवान राम के वनवास का कारण मानकर पछता रही है। लेकिन देवता, मदद के लिए तरसते हैं, उसे भगवान राम के दिव्य रूप के बारे में बताते हैं और उसे आम लोगों के कल्याण के लिए अयोध्या आने के लिए मजबूर करते हैं। अंत में, देवताओं को नैटो माइंडेड और दुनिया के कल्याण के लिए मानते हुए, सरस्वती सोचती है:

आगिल काजु बिचारि बहोरी। कहिहहिं चाह कुसल कबि मोरी॥
हरषि हृदयँ दसरथ पुर आई। जनु ग्रह दसा दुसह दुखदाई॥(4)

दिए गए संवाद में, भगवान राम को लेकर देवताओं और सरस्वती के बीच एक मानसिक संघर्ष चल रहा है, जहां देवता और सरस्वती दोनों भगवान राम द्वारा राज्य को छोड़ने और पूरी दुनिया के कल्याण के लिए वनवास जाने की कामना कर रहे हैं। . भगवान राम को यह काम करने के लिए दी गई प्रेरणा की प्रक्रिया में खुद को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किए जाने को देखकर देवी सरस्वती उदास हैं। अंत में, वह पूरी दुनिया के कल्याण और अपने कर्मों के परिणाम के बारे में सोचकर खुद को इस काम में आगे बढ़ाती है।

कैकेवी और मंथरा के बीच संवाद (एकल संवाद)

निम्नलिखित संवाद उस समय का है जब देवी देवताओं से प्रेरित होकर सरस्वती अयोध्या आती हैं और कैकेयी की दासी मंथरा के मन को नष्ट कर वापस चली जाती हैं। मंथरा को पता चलता है कि पूरे शहर को सजाने और शहर में बजने वाले शुभ गीतों का कारण भगवान राम का राज्याभिषेक है, फिर ईर्ष्या और गलत भावनाओं से भरकर वह कैकेयी के पास जाती है। वहाँ वह ऐसा व्यवहार करती है मानो वह दर्द से भर गई हो और रानी को उसकी मासूम हालत के लिए गाली दे रही हो।

पूतु बिदेस न सोचु तुम्हारें। जानति हहु बस नाहु हमारें॥
नीद बहुत प्रिय सेज तुराई। लखहु न भूप कपट चतुराई॥ (5)

रानी पहले मंथरा को उसकी बुरी भावनाओं के लिए डांटती है और फिर वह भगवान राम के राज्याभिषेक की खबर पर प्रसन्न होती है, वह भगवान राम के प्रति विशेष प्रेम दिखाती है, कहती है:

जौं बिधि जनमु देह करि छोहू। होहुँ राम सिय पूत पुतोहु॥
प्रान तें अधिक रामु प्रिय मोरें। तिन्ह कें तिलक छोभु कस तोरें॥ (6)

भगवान राम के लिए कैकेयी के प्रेम को देखते हुए, मंथरा ने उन्हें गुमराह करने के लिए एक और नाटक रचा। वह कैकेयी को अपने भविष्य को देखने और सोचने के लिए कहती है जहां भगवान राम के राज्याभिषेक के बाद कैकेयी कौशल्या की दासी बन जाएगी। मंथरा ने राजा दशरथ को भी गाली देते हुए कहा कि कैकेयी के लिए उनका प्यार केवल एक दिखावा है। पूरी बात को इस तरह से नाटक करते हुए मंथरा कहती हैं:

राजहि तुम्ह पर प्रेमु बिसेषी। सवति सुभाउ सकइ नहिं देखी॥
रचि प्रपंचु भूपहि अपनाई। राम तिलक हित लगन धराई॥ (7)

इस तरह, मंथरा की गलत शिक्षाओं से गुमराह होकर कैकेयी अपनी सोच को त्याग देती है और मंथरा से इसका समाधान मांगती है। इस पर मंथरा कहती हैं:

दुइ बरदान भूप सन थाती। मागहु आजु जुड़ावहु छाती॥
सुतहि राजु रामहि बनबासू। देहु लेहु सब सवति हुलासू॥(8)

मन्थरा, कैकेयी को राजा के कोमल शब्दों को न सुनने का सुझाव देते हुए, उसे कोप भवन जाने के लिए कहती है। इस तरह वह कैकेयी का मन खराब कर देती है और अपना शुभचिंतक बनने का नाटक करती है। दिए गए संवाद में, हम देवी सरस्वती से प्रेरित मंथरा की चालाकी देखते हैं। यह एक तथ्य है कि भगवान राम कैकेयी को बहुत प्रिय थे, लेकिन जैसे ही मंथरा ने उन्हें गुमराह किया, वह भगवान राम द्वारा राज्य छोड़ने और उनके वनवास जाने का कारण बन गईं। इस संवाद के माध्यम से भगवान राम का वनवास के लिए प्रस्थान होता है। इस सारे नाटक के पीछे का कारण राक्षसों का विनाश है और यही देवताओं की परम इच्छा थी।

दशरथ और कैकेवी के बीच संवाद (एकल संवाद)

निम्नलिखित संवाद उस समय का है जब राजा दशरथ कैकेयी के कोप भवन जाने का समाचार सुनते हैं। वह फिर उसके पास आता है और उसके गुस्से का कारण पूछता है,

बार बार कह राउ सुमुखि सुलोचनि पिकबचनि।
कारन मोहि सुनाउ गजगामिनि निज कोप कर॥(9)

इस प्रकार, जब राजा ने उससे उसके क्रोध के बारे में पूछा और अपना वादा पूरा करने की कसम खाई, तो कैकेयी फिर से खुश मिजाज के साथ गहने पहनने लगती है। जब राजा फिर से उसे उस शुभ दिन पर एक वरदान मांगने के लिए कहता है, तो कैकेयी ने दशरथ को राम के नाम पर शपथ दिलाई और उन्हें अपना

वादा निभाने की चेतावनी दी, वह उन्हें उन दो वरदानों की याद दिलाती है, जिनका उन्होंने एक बार वादा किया था, कहते हैं;

सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का। देहु एक बर भरतहि टीका॥
मागउँ दूसर बर कर जोरी। पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी॥ (10)

तापस बेष बिसेषि उदासी। चौदह बरिस रामु बनबासी॥
सुनि मृदु बचन भूप हियँ सोकू। सहि कह छुअत बिकल जिमि कोकू॥
(11)

कैकेयी की बात सुनकर दशरथ बहुत उदास हो जाते हैं। वह फिर से पूरे मामले के बारे में सोचकर भरत को युवराज बनाने के लिए सहमत हो जाता है, लेकिन वह कैकेयी से भगवान राम को वनवास भेजने से संबंधित अपने शब्दों को वापस लेने का अनुरोध करता है। इस पर कियाकेयी कुछ कठोर शब्द कहती हैं;

कहइ करहु किन कोटि उपाया। इहाँ न लागिहि राउरि माया॥
देहु कि लेहु अजसु करि नाहीं। मोहि न बहुत प्रपंच सोहाहीं॥(12)

कैकेयी की बातों को सुनकर दशरथ समझ जाते हैं कि वह उनकी मृत्यु के रूप में उनके पास आए हैं क्योंकि उन्हें पूरा यकीन था कि वह भगवान राम के बिना जीवित नहीं रह पाएंगे।

देखी ब्याधि असाध नृपु परेउ धरनि धुनि माथ।
कहत परम आरत बचन राम राम रघुनाथ॥(13)

इस तरह की टिप्पणियों से आहत होकर, राजा जमीन पर गिर जाता है और कैकेयी को उसकी बुरी इच्छाओं के लिए डांटता है। इस संवाद में, हम देखते हैं कि कैकेयी बुरे विचारों से घिरी हुई है। वह तब अपना विशिष्ट महिला चरित्र दिखाती है और राजा दशरथ को अपने नियंत्रण में लेने की कोशिश करती है। सबसे पहले, वह, भगवान राम से एक वादा लेते हुए, उसे कुछ भी देने के

लिए अपने शब्दों से बांधती है, जो वह चाहती है। फिर, वह उसे उन दो वरदानों की याद दिलाती है, जिनके वह हकदार थे। अपने एक वरदान में, वह भगवान राम का वनवास मांगती है और दूसरे में वह भरत को अपना राज्य सौंपने के लिए कहती है। यह एक महिला के अद्भुत चरित्र को दर्शाता है। इस संवाद के माध्यम से राजा दशरथ का अपने पुत्र भगवान राम के प्रति असीम प्रेम को दर्शाता है। जब वह भगवान राम से अलग हो जाता है तो उसकी मृत्यु हो जाती है। यह संवाद भगवान राम के वनवास और राजा दशरथ की मृत्यु का भी संकेत देता है।

भगवान राम और कैकेवी के बीच संवाद (एकल संवाद)

निम्नलिखित संवाद उस समय का है जब दशरथ अपनी बातों में बंधे हुए थे और कैकेयी की इच्छा पूरी करने के लिए सुमंत्र को भगवान राम को बुलाने का आदेश देते हैं। जब भगवान राम राजा की दुखद और दर्दनाक स्थिति को देखते हैं, तो वे अपनी मां से उनके दुख का कारण पूछते हैं। इस पर कैकेयी बताती हैं कि उनके दुःख का कारण उनके हृदय में भगवान राम के प्रति अपार प्रेम है। वह आगे कहती हैं:

सुत सनेहु इत बचनु उत संकट परेउ नरेसु।
सकहु त आयसु धरहु सिर मेटहु कठिन कलेसु॥ (14)

इस पर भगवान राम बड़े हर्ष के साथ अपने माता और पिता के आदेश को स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाते हैं और कहते हैं:

सुनु जननी सोइ सुतु बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी॥
तनय मातु रितु तोषनिहारा। दुर्लभ जननि सकल संसार॥ (15)

वनवास जाने और भरत को राज्य देने के विषय में भगवान राम बहुत खुश हैं। लेकिन अपने पिता की हालत देखकर वे दुखी हो जाते हैं और फिर कैकेयी से पूछते हैं कि क्या उनके पिता के दुःख का कोई और

कारण है। कैकेयी जो चाहती थी उसे पाकर बहुत खुश होती है। वह भगवान राम के प्रति झूठा प्यार दिखाते हुए उनसे अपने पिता को समझाने के लिए कहती है।

पितहि बुझाइ कहहु बलि सोई। चौथेंपन जेहिं अजसु न होई॥
तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहि दीन्हे। उचित न तासु निरादरु कीन्हे॥(16)

उपरोक्त संवाद में भगवान राम को आज्ञाकारी पुत्र के रूप में दिखाया गया है। वह अपने माता-पिता के प्रति अपनी आज्ञाकारिता को अपना प्रमुख कर्तव्य मानता है। इस कर्तव्य को पूरा करने के लिए, वह अपनी व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं को सहर्ष त्याग देता है। वह अपने साथ हुए अन्याय को भी अपना सौभाग्य मानता है। यह अतुलनीय गुण केवल भगवान राम में ही संभव है जो मर्यादापुरुषोत्तम हैं।

भगवान राम और दशरथ के बीच संवाद (एकल संवाद)

निम्नलिखित संवाद उस समय होता है जब राजा होश में आता है लेकिन अवसाद में कुछ नहीं कह पाता। अपने पिता भगवान राम की इस जटिल स्थिति को समझते हुए, उनके मन में उनके दर्द का कारण समझते हैं और फिर इसे कम करने के लिए, वे उनके आदेश को स्वीकार करने में अपनी खुशी दिखाते हैं। वह तब कहता है:

मंगल समय सनेह बस सोच परिहरिअ तात।
आयसु देइअ हरिष हियँ कहि पुलके प्रभु गात॥(17)

वह अपने पिता को यह कहते हुए सांत्वना देता है कि वह जल्द ही उनका आदेश पूरा करने के बाद वापस आ जाएगा और फिर उसकी अनुमति मांगेगा। उपरोक्त संवाद में, भगवान राम अपने माता-पिता के आदेश का पालन करते हैं और अपने पिता के दर्द के कारण को बहुत ही स्वाभाविक तरीके से समझते हैं। वह कैकेयी के सामने अपने पिता की रक्षा करने के लिए, निर्वासन जाने के उसके आदेश को बहुत आसानी से स्वीकार कर लेता है। वह इस काम को बेहद सरल और आसान बताते हैं।

निष्कर्ष

इन संवादों में, मुख्य रूप से, शिव-सती और भगवान राम के बीच संवाद, सती के संदेह से संबंधित, शिव-पार्वती के बीच संवाद, विश्वामित्र और दशरथ के बीच संवाद, विश्वामित्र और जनक के बीच संवाद, पार्वती और सीता के बीच संवाद, दशरथ और वशिष्ठ के बीच संवाद, कैकयी और मंथरा के बीच संवाद, दशरथ और कैकेयी के बीच संवाद, भगवान राम कौशल्या और सीता के बीच संवाद, भगवान राम-सीता और सुमंत्र के बीच संवाद, वाल्मीकि और भगवान राम के बीच संवाद, के बीच संवाद। वशिष्ठभारत और रिश्तेदार, भरत और भगवान राम के बीच संवाद, भगवान राम-शूर्पणखा और लक्ष्मण के बीच संवाद, रावण और मारीच के बीच संवाद, भगवान राम और जटायु के बीच संवाद, सुग्रीव और भगवान राम के बीच संवाद, जामवंत के बीच संवाद -अंगद और हनुमना, हनुम आना और विभीषण के बीच संवाद, सीता और हनुमना के बीच संवाद, रावण और विभीषण के बीच संवाद, वें ई अंगद और रावण के बीच संवाद, भगवान राम और रावण के बीच संवाद, सीता और भगवान राम के बीच संवाद, वशिष्ठ और भगवान राम के बीच संवाद आदि- सभी स्पष्ट रूप से घटनाओं को प्रभावित करते हैं और कहानी को दिशा देते हैं। उदाहरण के लिए, सती की शंकाओं से संबंधित शिव-सती और भगवान राम के बीच संवाद कहानी का आधार तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उसी प्रकार भगवान शिव और पार्वती के बीच भगवान राम के बारे में संवाद, हालांकि पार्वती की शंकाओं को दूर करने के संदर्भ में आया है, यह भगवान राम की कहानी को एक शुरुआत देता है और इस तरह के महत्व से संबंधित पात्रों को बांधता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अवस्थी, शरण, सद्गुरा। "तुलसीके चार दाल।" भारतीय प्रेस. दिल्ली। 2015

भारलवज, दत्ता, राम, और शर्मा, दत्ता भद्र। "तुलसी चर्चा।" लक्ष्मी प्रेस. कासगंज। सैम वी ए टी: 2005

बुल्के, कामिल, पिता, "राम कथा" हिंदी परिषद प्रकाशन। प्रवाग। 2010.

चौबे, लाई, बिहारी। "तुलसी सतसेन"। रॉयल एशियाटिक सोसायटी। कलकत्ता, 2010.

दास, सुंदर, श्याम, डॉ. और बड़थवाल, पीताम्बर, डॉ. "ग्वाहमी तुलसीदास," हिंदुस्तानी अकादमी। प्रयाज। 2015.

दास, माधव, बेनी। "मूल गोसाईं जप" गीता प्रीस गोरखपुर। संवत: 2011।

दीक्षित, रजतपति, डॉ. "तुलसी दास और उनका युग"। ग्वान मंडल लिमिटेड संवत: 2009।

गुप्ता, प्रसाद, माता, डी आर।" राम जप मानस", हिंदुस्तानी अकादमी। प्रवाग। संवत: 2006।

गुप्ता, प्रसाद, माता, डॉ. "तुलसीदास" हिंदी परिषद प्रकाशन। प्रवाग: 2011.

मालती, एस एम टी।" तुलसी वाणी"। प्रभात प्रकाशन। न्यू डी एल्ही: 2012